भ्रष्टाचार के प्रभाव से न्यायिक प्रणाली भी अछूती नहीं–न्यायमूर्ति पटनायक

मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना में न्यायविदों का योगदान अहम–दादी जानकी

आबू रोड, 19 जून, निसं। बदलते समय के दौर में हर क्षेत्र की वस्तुएं और परिस्थितियां बदलती जा रही है। आज के दौर में न्यायिक क्षेत्र में कार्य करने वालों से ज्यादा अपेक्षा नहीं की जा सकती। आज की न्यायिक प्रक्रिया भी भ्रष्टाचार के प्रभाव से अछूती नहीं है। उक्त उदगार सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश ए0 के0 पटनायक ने व्यक्त किये। वे शांतिवन में ब्रह्माकुमारीज संस्था के न्यायविद प्रभाग द्वारा मनाये जा रहे रजत जयंती समारोह के उपलक्ष्य में मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना में न्यायविदों का योगदान विषय पर देशभर से आये न्यायविदों को सम्बोधित कर रहे थे।

आगे उन्होंने कहा कि पहले कि न्यायिक प्रक्रिया व्यक्ति विशेष और जातीय प्रभावों से मुक्त हुआ करती थी। परन्तु आज के दौर में ऐसा नहीं कहा जा सकता। आज कोर्ट और वकीलों की स्थिति क्या है यह हर कोई जानता है। भ्रष्टाचार के तहत कार्य करने वाले वकीलों तथा जजों की संख्या में बढ़ोत्तरी चिंताजनक है। व्यक्ति को सदभावना का विकास करना चाहिए जिससे वे ज्यादा से ज्याद न्यायालय से दूर रह सके। उन्होंने वकीलों तथा जजों के उपर खुले तौर पर बोलते हुए कहा कि प्रोफेशन और पद के उपर व्यावसायिकता हावी हो रही है। इसलिए समय प्रति समय आने वाले न्यायिक परिणामों पर सवाल उठते रहे हैं। इसे सुधारे जाने की आवश्ययकता है। आज विज्ञान तथा सूचना प्रौद्योगिकी के युग में मशीनों का उपयोग कठिन से कठिन कार्यों के निराकरण के लिए उपयोग हो रहा है। परन्तु न्याय प्रणाली के लिए मनुष्य के दिमाण की ही आवश्यकता पड़ती है। यही कारण है कि आज मशीनी युग में भी फैसलों के लिए वकीलों, जजों तथा न्यायालयों की आवश्यकता पड़ती है। बदलते परिवेश में उन्होंने सकारात्मक परिवर्तन पर बल दिया। उन्होंने न्यायिक क्षेत्र से जुड़े हुए लोगों से अपील की कि वे निष्ठापूर्वक और ईमानदारी के साथ लोगों के साथ न्याय करें। जिससे अपराध और भ्रष्टाचार को बढ़ावा न मिले। उन्होंने ब्रह्माकुमारीज संस्था द्वारा मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना के लिए कार्य कर रहे लोगों के साथ जुड़कर कार्य करने की आवश्यकता है।

ब्रह्माकुमारीज संस्था की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी ने कहा कि समाज में सदभावना स्थापित करने के लिए हम सभी को मिलकर कार्य करने की जरूरत है। न्याय प्रणाली के क्षेत्र में कार्य करने वालों से अपील करते हुए कहा कि केवल पैसे और पद के लिए कार्य ना करें जिससे समाज में गलत संदेश जाये। हमें ऐसे कर्म करने चाहिए जिससे धर्मराज के दरबार में सर झुकाना पड़े। सदभावना और समभाव की दृष्टि से ऐसे सृष्टि का निर्माण हो जिसमें अपराध के लिए कोई स्थान न बचे। उन्होंने एक बेहतर विश्व बनाने पर जोर दिया। उन्होंन व्यक्तिगत जीवन में सुख शांति का संचार करने पर बल दिया।

कर्नाटक उच्च न्यायालय के न्यायाधीश ए एस पाचपुरे ने कहा कि जो भी फैसले गलत दिये जाते है उसके लिए जिम्मेदार कौन है यह हमें खुद सोचना है। यदि फैसले ऐसे ही प्रभावित होते रहे तो समाज को सही दिशा देने में मुश्किले खड़ी होगी और मूल्यनिष्ठ समाज का सपना पूरा नहीं हो सकता है। उन्होंने वर्तमान न्यायिक प्रणाली पर असंतुष्टता जाहिर करते हुए कहा कि जिस रूप में न्यायिक संस्था को जाना जाता है उसके अनुरूप परिणाम नहीं मिल रहे हैं।

राजयोग शिक्षा एवं शोध प्रतिष्ठान के न्यायविद प्रभाग के अध्यक्ष ब्र0 कु0 रमेश एन शाह ने कहा कि हमारे सम्मेलन आयोजित करने का हमेशा यही उद्देश्य सदैव न्यायिक प्रणाली में पारदर्शिता लाना रहा है। इसकी पिछले 25 सालों में काफी सफलता मिली है। इंसान को सदैव परमात्मा के न्यायालय से डरना चाहिए जिससे वे बुरे कर्म करने से डरे। गुजरात उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश ए0 एस0 कुरेशी ने कहा कि आज पूरे भारत में 15 लाख वकील है परन्तु अफसोस ये है कि इसमें से केवल 10 प्रतिशत वकील ही कानून के नियमों को गहराई से जानते व समझते है और यह केवल वकीलों में ही नहीं बल्कि जजों में भी है। यही कारण है कि समय प्रति समय आने वाले फैसलों पर लोगों के सवाल खड़े होते हैं। उड़ीसा उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश पी के मिश्रा ने भी न्यायायिक प्रक्रिया में आ रही गिरावट पर असंतोष जाहिर किया। कार्यक्रम में आये अतिथियों को योगानुभूति ब्र0 कु0 मोहिनी ने कराया तथा स्वागत भाषण दिल्ली से आयी ब्र0 कु0 पुष्पा ने किया। सम्मेलन के उदेश्यों के बारे में न्यायविद प्रभाग के राष्ट्रीय समन्वयक बी एल माहेश्वरी ने बताया तथा कार्यक्रम का संचालन ज्ञान सरोवर की ब्र0 कु0 गीता ने किया।

न्यायविद प्रभाग के रजत जयंती समारोह अवसर पर सभी अतिथियों को पगड़ी पहनाकर सम्मानित किया गया और फिर अतिथियों ने दीप जलाकर कार्यक्रम का उदघाटन किया। अतिथियों के कार्यक्रम में आने पर मिलीट्री पोशाक पर धुने बजाये गये।

फोटो, 19 एबीआरओपी, 1, 2, 3, 4, 5, 6 कार्यक्रम का दीप जलाकर उदघाटन करते अतिथि, भाषण प्रस्तुत करते, सभा में कैडल जलाकर सभा में उपस्थित।